कक्षा अवलोकन

दीपक दीक्षित



शिक्षकगण कक्षा अवलोकनों को सदैव ही सन्देह की दृष्टि से देखते हैं और एक शिक्षक होने के नाते मैं कक्षा अवलोकनकर्ता के अधिकार को भी समझता हूँ, चाहे वह सम्प्रेषित हो या प्रतीकात्मक। शिक्षक को लगता है कि अवलोकनकर्ता ऊँचाई पर बैठा हुआ एक ऐसा व्यक्ति है जो कक्षा की समाप्ति के बाद यह बताएगा कि कक्षा से सम्बन्धित मुद्दे क्या थे और उनका समाधान कैसे किया गया। एक शिक्षक के रूप में मैंने भी इन बातों को महसूस किया है और दूसरे लोग भी इस बात से सहमत होंगे कि कक्षा के अवलोकन को जिस तरीक़े से किया जाता है वह निरीक्षण अधिक और शिक्षक की मदद करने का साधन कम लगता है।

अज़ीम प्रेमजी स्कूल में कक्षा के अवलोकन का अर्थ एक अलग रूप में लिया गया है। यहाँ पर कक्षा के अवलोकन का अर्थ है शिक्षकों की मदद करना ताकि वे उन चीज़ों को जान सकें जिन्हें वे कक्षा में पढ़ाने के दौरान नहीं देख पाए थे। यहाँ कक्षा-अवलोकन का मतलब ग़लती खोजना नहीं है वरन कक्षा सम्बन्धी सूक्ष्म बातों को समझने में शिक्षक की सहायता करना है। इस प्रकार के कक्षा-अवलोकनों के लिए बहुत धैर्य और सोच-विचार की ज़रूरत होती है ताकि चुनौतियों को सीखने के अवसरों में बदला जा सके।

मैं कक्षा पाँच में था और पर्यावरण अध्ययन का पीरियड चल रहा था। शिक्षक तैयार थे क्योंकि उन्हें पहले ही अवलोकन योजना के बारे में बता दिया गया था। उस दिन का प्रकरण या टॉपिक था जल, जो सामान्य तो था पर साथ ही दिलचस्प भी था। तो प्रक्रिया के अनुसार मैंने सम्बन्धित शिक्षक के साथ चर्चा की और उन्होंने अपनी पाठ योजना मेरे साथ साझा की तथा संक्षेप में बताया कि वे उस पीरियड में क्या करने वाले थे। योजना स्पष्ट थी - जिसमें कुछ क्रियाकलाप थे, कुछ चर्चाएँ थीं, कुछ लिखित कार्य और एक संक्षिप्त व छोटी समूह चर्चा भी थी। कुल मिलाकर पाठ योजना भली प्रकार से सन्तुलित प्रतीत हुई। हम दोनों साथ में कक्षा के अन्दर गए।

शिक्षक ने पुनरावृत्ति के साथ पढ़ाना शुरू किया जिसमें विद्यार्थियों की भागीदारी काफ़ी अच्छी रही। अब शिक्षक अपनी कार्यसूची के अनुसार 'सुरक्षित पेयजल' पर कुछ गतिविधि करवाने के लिए तैयार हुए। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में इस बात की जागरूकता लाना था कि पानी कैसे प्रदूषित होता है और प्रदूषण के बाद पीने के लिए असुरक्षित हो जाता है। गतिविधि के अनुसार उन्हें एक पारदर्शी गिलास में पानी लेकर उसमें मिट्टी मिलाना था और विद्यार्थियों से पूछना था कि क्या यह पानी पीने के लायक है? अपेक्षित उत्तर था 'नहीं' और तब शिक्षक अपनी बात आगे बढ़ाते कि जब भूजल/नल के पानी में अशुद्धियाँ मिल जाती हैं तो वह पानी पीने के लिए असुरक्षित हो जाता है।

इस गतिविधि को शुरू करते हुए शिक्षक ने एक गिलास लिया, उसमें पानी की बोतल से थोड़ा पानी डाला और एक विद्यार्थी से कहा कि वह इस पानी का एक घूँट पिए। विद्यार्थी ने ऐसा ही किया। जिससे यह बात स्पष्ट हुई कि यह पानी पीने के लिए ठीक है। अब शिक्षक ने उस पानी में चॉक का चूरा मिलाया और पूछा कि क्या अब इस पानी को कोई पी सकता है? अन्दाजा तो यही था कि इस सवाल का जवाब सभी विद्यार्थी एक ज़ोरदार 'नहीं' से देंगे लेकिन...वहाँ तो चुप्पी छा गई... क्यों? क्या हुआ? शिक्षक ने फिर पूछा कि क्या कोई इसे पी सकता है?

'जी, हाँ', एक लड़का बोला।

यह बात शिक्षक के लिए चुनौती थी। 'मैं इसे पी सकता हूँ', उसने कहा, 'लेकिन आपको यह गिलास बिना हिलाए-डुलाए कुछ समय तक यूँही रखना होगा।'

मैं कक्षा में एक अवलोकनकर्ता था और मुझे भी पानी में चॉक पाउडर की घुलनशीलता के बारे में पता नहीं था क्योंकि मैंने कभी इसका परीक्षण नहीं किया था। मुझे ग़लतफ़हमी थी कि चॉक पाउडर पानी में घुल जाएगा। (अब मैं इसे ग़लतफ़हमी कह रहा हूँ)।

जाहिर था कि यह बात शिक्षक के लिए एक चुनौती थी। अब शिक्षक ने स्थिति को जटिल बनाने के लिए एक और चुनौती सामने रखी। उन्होंने कहा कि, 'ठीक है, शायद चॉक पाउडर के साथ आप इसे पी सकते हैं, लेकिन अब मैं इसमें मिट्टी, रेत और धूल डालूँगा,' उन्होंने ऐसा ही किया और कक्षा से फिर पूछा, 'क्या अब कोई इसे पी सकता है?'

अब हालत ऐसी हो गई थी कि लगता था कि यह योजना अवलोकनकर्ता के सामने एक डेमो कक्षा के रूप में प्रस्तुत कर दी जाएगी। लेकिन बच्चे तो आखिर बच्चे ठहरे। उनके दिमाग

में कुछ नया चल रहा था। पुनः एक विद्यार्थी बोला, 'जी हाँ, मैं पी सकता हूँ।'

शिक्षक ने पूछा, 'कैसे?'

जवाब मिला, 'मैं गन्दे पानी को आरओ मशीन के इनलेट में डालूँगा और नल से पीने का शुद्ध पानी ले लूँगा।'

विद्यार्थियों ने शिक्षक के सामने एक अलग ही स्तर की चुनौती रख दी। शिक्षक भी उनके सामने बेइज़्ज़त नहीं होना चाहते थे। अतः उन्होंने कहा, 'ठीक है, लेकिन अगर आपके पास आरओ मशीन न हो तो आप क्या करेंगे?' शिक्षक का प्रयास था कि किसी तरह विद्यार्थियों से पूर्व-निर्धारित और अपेक्षित उत्तर मिल जाए लेकिन विद्यार्थी भी योजनानुसार नियत उत्तर देने को तैयार नहीं थे। एक बार फिर चुप्पी छा गई!

फिर एक मन्द आवाज उभरी। एक लड़की बोली, ' हाँ, मैं बिना आरओ मशीन के भी काम चला सकती हूँ।'

अब तो शिक्षक के धैर्य का बाँध टूट गया और वे बोले, 'ठीक है, आप ऐसा कर सकती हैं लेकिन सारी बात तो यह है कि अगर पानी में कोई अशुद्ध चीज़ मिल जाए तो वह पीने लायक नहीं रहता।' और फिर शिक्षक अपनी पाठ योजनानुसार आगे बढ़ गए। कक्षा ख़त्म हो गई।

स्कूल के बाद हम दोनों इस बात पर चर्चा करने लगे कि क्लास कैसी रही। शिक्षक ने स्वीकारा कि कुछ विद्यार्थियों की वजह से कक्षा में रुकावट आई और उनकी योजना पटरी पर से उतर गई इत्यादि। चर्चा के दौरान मैंने उनसे पूछा कि जो विद्यार्थी पानी को पीने के लिए उपयुक्त बनाने की बात कर रहे थे, अगर आप उनसे अपनी बात साबित करने के लिए कहते तो क्या होता। शिक्षक के रूप में हम विद्यार्थियों के सामने चुनौतियाँ प्रस्तुत कर सकते हैं और उन्हें अपनी बात साबित करने को कह सकते हैं। तो फीडबैक सत्र में मैंने उनके साथ अगले दिन के लिए एक योजना साझा की कि वे उसी विषय को जारी रखें और जो विद्यार्थी पानी को पीने के लिए उपयुक्त बनाने की बात कह रहे थे, उनसे कहें कि वे आगे आएँ और हमें दिखाएँ कि वे इसे कैसे करना चाहते हैं। इसके लिए आवश्यक सामग्री की सूची बनाकर हमें दें जिन्हें मुहैया कराने की कोशिश हम करेंगे। देखें, क्या होता है।

अगले दिन शिक्षक कक्षा में गए और हमारी चर्चा के अनुसार कक्षा की गतिविधि आगे बढ़ाई। आश्चर्य की बात यह थी कक्षा के लगभग 75% विद्यार्थी अपने दावों का प्रदर्शन करने और उन्हें साबित करने के लिए तैयार थे। इसलिए उन्होंने ज़रूरत के सामान की सूची बनाई और विद्यार्थियों को वे चीजें दीं। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि विद्यार्थियों के कई समूहों को आसवन और पृथक्करण की तकनीकों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, लेकिन वे अपने प्रयोगों में इनका इस्तेमाल कर रहे थे।

विद्यार्थियों का एक समूह गिलास में पानी लेकर उसे मोमबत्ती पर रखकर उबाल रहा था और वाष्प को एकत्र कर रहा था व संघनित वाष्प को एक अलग गिलास में एकत्र किया जा रहा था।

दूसरा समूह पानी की तीन बोतलों को काटकर उनका उपयोग कर रहा था। एक का उपयोग छलनी के रूप में किया गया और इसमें एकत्रित पानी को साफ़ कपड़े की सहायता से पुनः छाना गया और फिर पानी को पत्थर, रेत और लकड़ी के कोयले या चारकोल की परत की सहायता से साफ़ किया गया।

हालाँकि उपकरण और अनुभव की अपनी सीमाएँ थीं पर सैद्धान्तिक रूप से प्रक्रिया सही थी। एक विद्यार्थी ने मुझे दिखाया कि वह पानी से चॉक पाउडर कैसे अलग करेगा। मैंने देखा कि चॉक पाउडर तलछट के रूप में नीचे जमा हो गया और ऊपर का पानी एकदम साफ़ और पारदर्शी था। रासायनिक रूप से भले ही यह पानी पीने लायक नहीं था लेकिन भौतिक रूप से पृथक्करण की प्रक्रिया स्पष्ट थी।

सबसे बढ़िया बात तो यह थी कि हमारे लिए यह एक सुखद आश्चर्य का विषय था कि पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थी हमारी अपेक्षा से अधिक जानकारी रखते थे। हमने तो सोचा ही नहीं









था कि विद्यार्थी पृथक्करण के इन जटिल तरीक़ों के बारे में जानते होंगे। अब मुझे लगने लगा है कि शायद हम अपने विद्यार्थियों की योग्यता को वास्तविकता से कम आँकते हैं और उन्हें तब तक एक निर्धारित स्तर तक सीमित रखते हैं जब तक कि वे स्पष्ट रूप से यह न दिखा दें कि हम उनसे जितना कार्य करवा रहे हैं, वे उससे कहीं अधिक करने में सक्षम हैं।

दीपक दीक्षित उत्तराखण्ड के दिनेशपुर में स्थित अज़ीम प्रेमजी स्कूल के प्रधानाध्यापक हैं। इससे पहले वे इरित्रिया के शिक्षा मंत्रालय में 10 वर्षों से भी अधिक समय तक कार्यरत रहे। उन्होंने एम.एससी., बी.एड. और एम.बी.ए. की डिग्री प्राप्त की हैं। भौतिक शास्त्र के शिक्षक के रूप में उनका अनुभव 17 वर्षों से भी अधिक है। उन्हें इलेक्ट्रॉनिक्स पढ़ाने में रुचि है। उन्होंने होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र, मुम्बई में एप्स्टिमी-6 में विज्ञान शिक्षण सम्बन्धी पेपर प्रस्तुत किए हैं। "टीचर – अ रिफ्लेक्टिव प्रैक्टिसनर" शीर्षक पुस्तक में कक्षा शिक्षण पर उनका लेख प्रकाशित हुआ है। उन्हें टेबल टेनिस खेलने और पढ़ने का शौक है। उनसे deepak.dixit@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल